DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor,
Deptt. of Sanskrit,
S.R.A.P. College, Bara chakia

B.A. (Hons.), Part – II
Subject – Sanskrit
Paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० – 29

स्रस्तांसावतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणा –
दद्यापि स्तनवेपथुं जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः ।
बद्धं कर्णशिरीषरोधि वदने घर्माम्भसां जालकं
बन्धे स्रंसिनि चैकहस्तयमिताः पर्याकुला मूर्धजाः ॥

अन्वयः

घटोत्क्षेपणात् अस्याः बाहू स्रस्तांसौ अतिमात्रलोहिततलौ (स्तः), प्रमाणाधिकः श्वासः अद्यापि स्तनवेपथुं जनयति, वदने कर्णशिरीषरोधि घर्माम्भसां जालकं बद्धम् (अस्ति) बन्धे स्रंसिनि मूर्धजाश्च एकहस्तयमिताः पर्याकुलाः (सन्ति) ।

अनुवाद

कलश उठाने के कारण इसके दोनों हाथ कन्धे पर से कुछ नीचे की ओर लटक आये हैं। दोनों हाथों की हथेलियाँ भी लाल हो गयी हैं। अति परिश्रम से श्वास भी लम्बा-लम्बा चल रहा है, जिससे दोनों स्तन भी कुछ कम्पित से हो रहे दीख पड़ते हैं। शिरीष के फूलों से बने हुए कर्णफूलों से चिपकनेवाले पसीने के इन बिन्दुओं का जाल-सा मुखमण्डल पर छा गया है और इसके सिर का जूड़ा भी ढीला होकर हाथ से पकड़े जाने पर भी इधर-उधर बिखर रहा है। इस प्रकार इसका केशपाश अस्तव्यस्त हो रहा है।